प्रोसेसर

26 अक्टूबर 2019

, , , — " " : , — , — : " , , " : ?

पहला दृश्य दो युवा जलवायु-कार्यकर्ताओं का है। एक आन्दोलन से, दूसरा से।
सक्रियता स्वयं एक कथन नहीं, एक अनुभव के रूप में साझा की जाती है: बोआज़ीची की हड़ताल में एक बिल्ली पोस्टरों के बीच आकर बैठ गयी और सब उसके साथ खेलने लगे। सिनोप में बच्चों ने अपनी हड़ताल आयोजित करने के बाद पार्क की ओर दौड़ लगायी। एक छोटी बच्ची — — कैमरे की ओर देखकर बोली "मेरा नाम है। मैं जलवायु-मित्र हूँ।" चलचित्र-निर्माण के पर्दे-के-पीछे के दृश्यों में सब हँसते हैं, बकवास करते हैं, मज़े लेते हैं। एक क्षण में चलचित्र में कुछ गड़बड़ हो जाती है — "मैंने गड़बड़ कर दी, जैसे मैं उठाती हूँ वैसे ही चलचित्र भी हो जाता है" — और यह अनाड़ीपन भी क्रिया का अंश है।

" "

, - , ,- — , : , - — , , , — - , ,

दूसरा स्वर एक रेडियो-प्रोग्रामर का है — जलवायु-संकट के सबसे हठीले स्वरों में से एक। महान प्रोसेसर को समझाने के लिए वे एक गोरिल्ला से आरंभ करते हैं। — एक मानवविज्ञानी ने जिसे वर्षों कार्य कर सङ्केत-भाषा सिखायी। पेरिस जलवायु-शिखर से पहले "दुनिया की दशा क्या होगी" इस प्रश्न का का उत्तर था: "मैं फूल हूँ। मैं प्रकृति मनुष्यों से प्रेम करती हूँ। पर मनुष्य मूर्ख है। प्रकृति की मरम्मत आवश्यक है। समय नहीं बचा।" उसके कुछ समय बाद चल बसी पर उसका सन्देश चल रहा है।

फिर महान प्रोसेसर का एक और चमत्कार: अमेज़न में रहता श्वेत-घण्टी-पक्षी अपनी साथिन को बुलाने के लिए एक सौ पच्चीस डेसिबिल की ध्वनि निकाल सकता है — एक कंक्रीट-छेदक मशीन के बराबर। में हाल ही में प्रकाशित यह खोज। पिछले सप्ताह के विषयों में से एक कंक्रीट था; एक नर पक्षी का अपनी मादा को आकर्षित करने के लिए कंक्रीट-छेदक मशीन के शोर के बराबर इतनी विशाल ध्वनि निकाल पाना भी महान प्रोसेसर द्वारा रचित असाधारण वस्तुओं में से एक है। अमेज़न में रहता यह पक्षी और अनुमान के अनुसार ख़तरे में — अमेज़न की अन्य अधिकांश प्रजातियों की भाँति।

> "क्रिया के अतिरिक्त करने को और कुछ दिखाई नहीं देता। यह अत्यन्त स्पष्ट है।"

के संस्थापक की पुस्तक के मुख-कथन से एक वाक्य उद्धृत किया जाता है: "इस क्षण से निराशा समाप्त होती है और रणनीतियाँ आरंभ होती हैं।" ग्यारह वर्ष बचे हैं — अन्तर-शासकीय जलवायु-समिति के हिसाब से। पचास प्रतिशत सफलता का अवसर। पर यही पचास प्रतिशत हमारा अन्तिम अवसर है। और इस अन्तिम अवसर में विद्रोह करते हुए आनन्द लेना अनिवार्य है — तक यही कहते हैं।

कैसे हुआ जाए

तीसरा दृश्य अप्रत्याशित स्थान से आरंभ होता है: 12 अप्रैल 1993। और की संयुक्त परियोजना से तुर्की का प्रथम इंटरनेट-सम्बन्ध स्थापित हुआ जिस दिन। उसी वर्ष अक्टूबर में, अभी इक्कीस वर्ष के ने इस्तानबुल में तीन सप्ताह स्टूडियो में बन्द होकर "" एल्बम रिकॉर्ड किया। एल्बम में एक गीत है: " " (हाल और बदतर)। जलवायु पर कुछ सक्रिय करने के पीछे लगे यह गीत लिखते हैं: फूल नहीं खिल रहे, धूल-धुआँ, दिल ख़तरे में, बच्चों — दुनिया जल रही है, दुनिया मिट रही है, गिरावट काली। इंटरनेट-युग के आरंभ के साथ पारिस्थितिक पतन की चेतना उसी क्षण में। हमारा जलवायु-परिवर्तन-गान पहले से लिखा जा चुका है — 1993 में, प्रतिदिन साढ़े तीन अरब भेजे जाने और प्रति मिनट तीन सौ घण्टे का चलचित्र अपलोड होने से बहुत पहले।

एक क्यूरेटर और एक निर्देशक मञ्च पर आते हैं और अपनी प्रस्तुति तैयार करते हुए सोचे गए विचार साझा करते हैं: इन झंझटों से कैसे बाहर निकला जा सकता है। उनके प्रश्न भिन्न हैं: जलवायु-संकट है या नहीं — है। लोगों को आश्वस्त करना भी उनका वर्तमान प्रश्न नहीं — , , 350 जैसी संस्थाएँ इसे पहले से ही बहुत अच्छा कर रही हैं। असली प्रश्न: जलवायु-संकट पर निरन्तर सोचना थकाने वाला और चुकाने वाला है, मनुष्य को क्षीण कर देता है — इसलिए वे नई पद्धतियाँ खोजकर बात करने का प्रयास कर रहे हैं। भिन्न संचार-पद्धतियाँ सोचने, ताज़ा बने रहने, निराश होते हुए भी आशा बचाए रखने, भयभीत होते हुए भी हार न मानने को। कैसे हुआ जाए?

की गहराइयों से एक चलचित्र निकाला जाता है: चौबीस लोगों ने देखा, उनमें से पन्द्रह सम्भवतः वे स्वयं हैं। "आपके लिए हमने ढूँढ़कर ले आए," वे कहते हैं। एक बच्चा अपने पिता से वैश्विक तपन के प्रश्न पूछ रहा है — पिता की परीक्षा ले रहा है। पिता मानो रट चुके हों, असाधारण शान्ति से अन्तिम प्रश्न का उत्तर देते हैं: सबसे बुरा परिदृश्य क्या है? "उद्योग का दिवालिया हो जाना, छत छूते खाद्य-मूल्य, सामूहिक अकाल और मृत्यु।" इतनी शान्ति से ऐसी बातें कहने वाला और कोई मुख नहीं सुना गया। यह शान्ति स्वयं भयानक और हास्यपूर्ण एक साथ है। सभागार पल भर हँसता है, फिर चुप होता है, फिर हँसता है। इंटरनेट पर तेज़ी से फैलते चित्र, चलचित्र और मीम जलवायु-संकट के संचार में प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं — लोकप्रिय संस्कृति, हास्य, अबसर्ड शान्ति नए उपकरण हैं।

> "जलवायु-संकट के संचार में कैसे हुआ जाए?"

,

— , - : " ? -! ? , !" : , , ,

> "विनम्र होने के स्थान पर क्रोधित होना श्रेयस्कर है।"

दस वर्ष पीछे जाते हैं: कोपनहेगन 2009। उस समय वैश्विक जलवायु-व्यवस्था पर आस्था रखने वाले, तत्काल समाधान पर विश्वास रखने वाले एक संगठन का अंश थे। बड़ी आशा, बड़ा पतन। डेनमार्क-शासन ने आपातकाल घोषित किया, सड़कों के प्रदर्शनकारी आतंकित किए गए, अनेक पिंजरों में डाले गए, शिखर कोई परिणाम नहीं निकाल सका। इस विशाल पतन से क्या सीखा? यह कि पेरिस-समझौते जैसी ऊपर-से-नीचे की अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थाएँ अकेले वैश्विक जलवायु-संकट का समाधान कर देंगी, इस भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। की भाषा में: सब कुछ बदलने के लिए हमें सब चाहिए — पर सब कौन, सब कुछ क्या? असली प्रश्न ये हैं।

अकादमिक - को मेज़ पर रखते हैं। भूगोलविद की की संकल्पना से आगे बढ़ते हैं: नगर आज विशाल सामाजिक-पारिस्थितिक चयापचयों के रूप में चल रहे हैं — की कल्पना कीजिए, मनुष्य और प्रकृति आपस में मिले हुए, मशीन और जीव अविच्छेद्य। पर - इसी सम्मिश्रण को समाधान के रूप में प्रस्तुत करता है: हमारे बनाए दानवों को हमारे ही बनाए दानवों से नष्ट करने का विचार। परमाणु ऊर्जा, कार्बन-कैप्चर, - — सब उसी तकनीकी अहं के विस्तार हैं, सब ऊँचा सामाजिक-पारिस्थितिक बलि लेकर आते हैं। यह बलि कौन चुकाएगा? - का वादा अपने भीतर ही असंगत है।

तो विकल्प क्या है? नियोजित आर्थिक संकुचन — वृद्धि स्वयं पर प्रश्न उठाना। वृद्धि न हो तो सब आपदा देखते हैं, संकट कहते हैं — पर वृद्धि का असीम चलते रहना ही असली आपदा है। का वचन: " चलने के काम आती है। हर क़दम पर वह दूर हटती है, पर हमें चलाते रहती है।" वास्तविक को इसी विचार पर रचना है — हर स्तर पर: स्थानीय मोहल्ले में, क्षेत्रीय जालों में, ग्रहीय राजनीति में आमूल क्रान्तियों की आवश्यकता है। बैटरी से चलते खरगोश से दौड़ लगाते घोंघे की कथा में वीर घोंघा वास्तव में सिकुड़ती पर डटी अर्थव्यवस्था का रूपक है। स्त्रीवादी लेखिका के -घोषणा-पत्र से आगे बढ़कर क्या हम जीवों और मशीनों के बीच की सीमाएँ हट चुकीं ऐसी दुनिया में एक नई पारिस्थितिक दृष्टि रचेंगे, या उसी तकनीकी अहं से एक और आपदा की ओर बढ़ेंगे?

— " , " — -, - , , -

जलवायु-परिवर्तन कहते समय 'मानवता' कही जा रही संकल्पना कोई एक सत्ता नहीं — इसके भीतर के व्यक्ति और समूह एक-सा उत्तरदायित्व नहीं वहन करते और परिणाम भी एक-से अनुभव नहीं करते। नार्वेजियन और स्पेनी विशाल मछली-बेड़े अपने समुद्रों की मछली समाप्त कर चुके हैं। द्विपक्षीय समझौतों से सेनेगल और मॉरितानिया के तटों पर पहुँचते हैं। छोटे-स्तर के मछुआरे अपने ही संसाधनों तक नहीं पहुँच पाते और जब यूरोप की ओर प्रवास को बाध्य होते हैं, तब "तुम्हारी मछली आ सकती है पर तुम्हारे कागज़ नहीं हैं, तुम नहीं आ सकते" इस

उत्तर का सामना करते हैं। -शरणार्थी — समुद्र-तल की खनन-गतिविधि से लेकर प्रशान्त के छोटे द्वीप-राष्ट्रों के औपनिवेशिक उद्योग से सामना तक फैली एक अन्यायपूर्ण शृंखला।

--- 1997 ; - - — - - ? , , — , - , — , , -

"महासागर हम हैं, जन हम हैं।"

: — , , "" : , ", " — , , , - — ,

समापन में पाँच सप्ताहों के निशान एकत्र किए जाते हैं। जलवायु-न्याय की बात हुई, विलोप की बात हुई। जैव-विविधता के महत्त्व, जलवायु-हड़तालों, सड़क पर निकलते लोगों की संख्या के एक ही वर्ष में लाखों तक पहुँच जाने की बात हुई। जल के बहने का अधिकार, पेट्रोल का असली मूल्य, आलू का आनुवंशिक तालाब, कंक्रीट के नीचे की देहें — और अब प्रोसेसर के भविष्य-कल्पना। एक अन्तःक्रियात्मक सामूहिक ने पूरे सभागार में "सम्बन्ध-निर्माण-खेल" खिलाया, प्रतिभागियों से भविष्य के सुझाव एकत्र किए: सार्वजनिक प्याऊ, साझा कम्पोस्ट-क्षेत्र, निर्माण-सीमा, - कप के विकल्प, सहकारी दुकानें। छोटी, मूर्त, मोहल्ले से आरंभ होती प्रथाएँ।

कोई पूछता है: तो आज सुबह से इस घड़ी तक ये सब अंधकारमय वार्तालाप सुनकर भी हम अब तक यहाँ क्यों हैं? हम क्यों नहीं भागे? उत्तर सरल और प्रबल है: "यदि हम निराशावादी स्वभाव के होते, तो हममें से अधिकांश इस समय यहाँ न होते। भाग जाते, दूर हट जाते। हमें ख़ुशी आपस में बाँटनी होगी ताकि एक-दूसरे से आशा पाएँ और कुछ करने के लिए शक्ति पाएँ।" इसीलिए वास्तव में जो भी किया जा रहा है — विशेषकर इस विषय में — वह है अपने भीतर की आशा को एक-दूसरे को ऊर्जा-पूर्वक हस्तान्तरित करना। कार्यक्रम इसी प्रकार समाप्त होता है: पाँच वस्तुएँ, पाँच सप्ताह, जल-पेट्रोल-आलू-कंक्रीट-प्रोसेसर — रोज़मर्रा की वस्तुओं से आरंभ कर ग्रह-संकट तक, वहाँ से भविष्य-कल्पनाओं तक, वहाँ से मोहल्ले के सहकारी तक, वहाँ से सभागार के सम्बन्ध-निर्माण-खेल तक। कलाकार की भावना, शोधकर्ता के तथ्य, सामाजिक आन्दोलनों की भड़काऊ शक्ति को एक स्थान पर लाने का प्रयास — आरंभ से यही कहता आ रहा है। सामान्यतः इतने भिन्न उत्पादन-अभ्यासों के लोग, जो एक स्थान पर आ ही न पाते, आमने-सामने आकर बात करना आरंभ करते हैं। और यह बातचीत का होना, यह मिलन का होना, स्वयं एक क्रिया है।

हम नहीं जानते कि क्या करेंगे — पर यह न जानना ही एक प्रस्थान-बिन्दु है। और इस प्रस्थान-बिन्दु पर बच्चे की तरह खेलना, क्रोधित होना, होना, सहकारी रचना, घोंघे की तरह धीमे पर दृढ़ता से चलना — सब एक ही समय में सम्भव। शायद कार्यक्रम का अन्तिम वाक्य यही है: विनाश के मध्य में आनन्द के साथ विद्यमान रहना।